दिनांक :- 25-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ. फारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- 11 th (ऑनर्स)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास (कला)

इकाई :- तीन

अध्याय :- तीन महाद्वीपों में फैला हुआ साम्राज्य

~~अध्याय~~ :- श्रमिकों पर नियंत्रण :- भूमध्यसागर और निकटवर्ती पूर्व (पश्चिमी एशिया) दोनों ही देशों में दासता की जड़े बहुत गहरी थी और चौथी शताब्दी में ईसाई धर्म ने राज्य-धर्म बनने के बाद भी इस गुलामी की प्रथा को कोई गंभीर चुनौती नहीं दी। इसका अर्थ यह नहीं है कि रोम की अर्थव्यवस्था में अधिकांश श्रम दासों द्वारा ही किया जाता था। तथापि यह बात गणतंत्रीय काल में इटली के मामले में सही हो सकती है। जहाँ ऑगस्टस के शासनकाल

में इटली में कुल 75 लाख की आबादी में 30 लाख दास थे किन्तु समग्र साम्राज्य में ऐसी स्थिति नहीं थी उन दिनों दासों को पूँजी-निवेश की दृष्टि से देखा जाता था। कम से कम रोम के एक लेखक ने तो जमींदारों को ऐसे संदर्भों में उन गुलामों का इस्तेमाल न करने की सलाह दी, जहाँ फसल की कटाई के लिए उनकी बहुत बड़ी संख्या में आवश्यकता हो अथवा जहाँ स्वास्थ्य को मलेरिया जैसी बीमारियों से नुकसान पहुँच सकता हो। ऐसे विचार दासों के प्रति सहानुभूति पर नहीं बल्कि हिसाब-किताब पर आधारित थे। एक ओर जहाँ उच्च वर्ग के लोग दासों के प्रति प्रायः क्रूरतापूर्ण व्यवहार करते थे, वहीं दूसरी ओर साधारण लोग उनके प्रति कहीं अधिक सहानुभूति रख सकते थे। नीरो के शासनकाल में घटी एक प्रसिद्ध घटना के बारे में देखिए एक इतिहासकार क्या कहता है

जब पहली शताब्दी में शांति स्थापित होने के साथ लड़ाई झगड़े कम हो गए दासों की आपूर्ति में कमी आने लगी और दास श्रम का प्रयोग करने वाले को दास प्रजनन (Slave Breeding) अथवा वेतन भोगी मजदूरों जैसे कि स्त्री का सहारा लेना पड़ा। वेतन भोगी मजदूर सस्ते तो पड़ते ही थे, उन्हें आसानी से छोड़ा और रखा जा सकता था। वास्तव में, रोम में सरकारी निर्माण-कार्यों पर स्पष्ट रूप से मुक्त श्रमिकों का व्यापक प्रयोग किया जाता था क्योंकि दास-श्रम का बहुतायत प्रयोग बहुत महँगा पड़ता था। भाड़े के मजदूरों के विपरीत, गुलाम श्रमिकों को वर्ष भर रखने के लिए भोजन देना पड़ता था और उनके अन्य खर्चे भी उठाने पड़ते थे, जिससे इन गुलामी श्रमिकों को रखने की लागत बढ़ जाती थी। इसीलिए संभवतः लाट की अवधि में कृषि-क्षेत्र में अधिक संख्या में गुलाम मजदूर नहीं रहे।

Scanned with CamScanner

कम से कम पूर्वी प्रदेशों में प्रदेशों में तो ऐसा ही हुआ। दूसरी ओर इन दासों और मुक्त व्यक्तियों (अर्थात ऐसे दास जिन्हें उनके मालिकों ने मुक्त कर दिया था) को व्यापार-प्रबंधकों के रूप में व्यापक रूप से नियुक्त किया जाने लगा। यहाँ स्पष्टतः उनकी अधिक संख्या में आवश्यकता नहीं थी। मालिक अक्सर अपने गुलामों अथवा मुक्त हुए गुलामों को अपनी ओर से व्यापक व्यापार चलाने के लिए पूँजी यहाँ तक कि पूरा का पूरा कारोबार सौंप देते थे। रोमन कृषि-विषयक लेखकों ने श्रम-प्रबंधन की ओर बहुत ध्यान दिया। दक्षिणी स्पेन से आए पहली शताब्दी के लेखक कोलूमेला (Columella) ने सिफारिश की थी कि ज़मींदारों को अपनी जरूरत से दुगुनी संख्या में उपकरणों तथा औजारों का सुरक्षित भंडार रखना चाहिए ताकि उत्पादन लगातार होता रहे, क्योंकि दास संबंधी श्रम-समय की हानि ऐसी मदों की लागत से

Scanned with CamScanner

अधिक बैठती है. नियोक्ताओं की यह आम धारणा थी कि निरीक्षण यानी देखभाल के बिना कभी भी कोई काम ठीक से नहीं करवाया जा सकता। इसलिए मुक्त तथा दास योनी प्रकार के श्रमिकों के लिए निरीक्षण सबसे महत्वपूर्ण पहलू था। निरीक्षण को सरल बनाने के लिए कामगारों को कभी-कभी छोटे दलों में विभाजित कर दिया जाता था। कोलूमेल्ला ने दस-दस श्रमिकों के समूह बनाने की सिफारिश की थी और यह दावा किया कि इन छोटे समूहों में यह बताना अपेक्षाकृत आसान होता है कि इन छोटे समूहों में यह बताना अपेक्षाकृत आसान होता है कि उनमें से कौन काम कर रहा है और कौन कामचोरी! इससे पता चलता है कि उन दिनों श्रम-प्रबंधन पर विस्तार से विचार किया जाता था। वरिष्ठ प्लिनी एक प्रसिद्ध प्रकृति विज्ञान के लेखक ने दास समूहों का प्रयोग की यह कहकर निंदा की कि यह उत्पादन आयोजित करने का सबसे खराब

तरीक़ा है क्योंकि इस प्रकार अलग-अलग समूह में काम करने वाले दासों को आमतौर पर पैरों में जंजीर डाल कर एक साथ रखा जाता था। ऐसे तरीके कठोर और क्रूर प्रतीत होते है. लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए कि आज विश्व में अधिकांश फैक्ट्रियाँ श्रम नियंत्रण से कुछ ऐसे ही सिद्धांत लागू करती है! वास्तव में, रोमन साम्राज्य में कुछ औद्योगिक प्रतिष्ठानों ने तो इससे भी अधिक कड़े नियंत्रण लागू कर रखे थे वरिष्ठ प्लिनी ने सिकंदरिया की फ्रैंकिन्सेंस (Frankincense) यानी सुगंधित राल (Resin) की फैक्ट्रियों के हालात का वर्णन किया है, जहाँ उनके अनुसार लगा दी जाती है. उन्हें अपने सिर पर एक गहरी जाली वाला मास्क या नेट पहनना पड़ता है और कितना ही कड़ा निरक्षण रखो, पर्याप्त प्रतीत नहीं होता था, कामगारों के एप्रनों पर एक

सील लगा दी जाती है। उन्हे फैक्ट्रियो से बाहर जाने के लिए अपने सभी कपड़े उतारने पड़ते हैं। कृषि श्रमिक अवश्य ही थके-थके से रहते होंगे और उन्हे नापसंद किया जाता होगा क्योंकि तीसरी शताब्दी के एक राजदेश में मिस्त्र के किसानो द्वारा अपने गाँव छोड़कर जाने का उल्लेख है जिसमें यह कहा गया कि वे इसलिए गाँव छोड़कर जा रहे थे ताकि उन्हे खेती के काम में न लगाना पड़े। संभवतः यही बात अधिकांश फैक्ट्रियो और कारखानों पर लागू होती थी। 398 के एक कानून में यह कहा गया है कि कामगारो को दागा जाता था ताकि यदि वे भागने और छिपने का प्रयत्न करे तो उन्हे पहचाना जा सके कई निजी मालिक कामगारो के साथ ऋण-संविदा के रूप में करार कर लेते थे ताकि वे यह दावा कर सकें कि उनके कर्मचारी उनके कर्जदार हैं, और प्रकार वे अपने कामगारो पर कड़ा नियंत्रण रखते थे।